समावेशी शिक्षक के गुण
(QUALITIES OF INCLUSIVE TEACHER)

समावेशी (Inclusive) स्कूल में प्रत्येक शिक्षक महत्त्वपूर्ण है जो कि समावेशी कक्षाकक्ष की सफलता या असफलता के प्रति उत्तरदायी होता है। शिक्षकों में निम्न गुणों का होना अनिवार्य है अर्थात् ऐसी योग्यताएँ जो उनको अपने कक्षाकक्ष में प्रभावी बनायें—

1. विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का समाधान कर सके या करवा सके।

2. उसमें इस प्रकार की योग्यता हो कि वह विद्यार्थियों की व्यक्तिगत रुचियों और आन्तरिक प्रेरणा से वांछनीय कौशलों का विकास कर सके।

3. विद्यार्थियों की सक्षमताओं में अन्तर होते हुए भी प्रत्येक छात्र की उपयुक्त आकांक्षाओं की पूर्ति करे। अगर शिक्षक यह सब करने में सफल होता है तो वह सभी विद्यार्थियों को स्कूल व कक्षा में शामिल कर सकता है।

4. शिक्षक में इस प्रकार की योग्यता हो कि विद्यार्थियों के दत्तकार्य को परिमार्जित करे और कक्षाकक्ष की क्रियाओं का ऐसा प्रबन्ध करे जिससे सभी स्तर के छात्र भाग ले सकें।

5. शिक्षक में इस प्रकार की योग्यता होनी चाहिये कि बालकों में किस प्रकार के कौशल हैं उनके मूल्यों का आकलन करे केवल शिक्षण से सम्बन्धित कौशल तक सीमित न रहे। ऐसा करने के लिये शिक्षक कक्षाकक्ष में सभी कौशलों का आकलन करेगा।

6. शिक्षक में यह भी योग्यता हो कि विद्यार्थियों की दिन-प्रतिदिन की सफलता बता सके।

7. अधिगम को सुखदायक एवं आनन्दमय बनाने की योग्यता हो।

शिक्षक की कुछ अन्य क्षमताएँ एवं योग्यताएँ जो उसकी समावेशी वातावरण बनाने में अनुकूलता पैदा करती है—

1. बालकों को यह अहसास करवाया जाये कि कक्षा में हर बालक का उत्तरदायित्व है। शिक्षक को

यह जानने पर बल नहीं देना चाहिये कि हर बालक के साथ कैसे काम किया जाये बल्कि इस बात पर बल दे कि उसको कैसे शिक्षित किया जाये।

2. अनेक अनुदेशनात्मक आव्यूहों (Strategies) का जानकार हो और यह भी पता हो कि इनको प्रभावशाली ढंग से कैसे प्रयोग में लाया जाये। शिक्षक में यह भी योग्यता हो कि जिस सामग्री को अपनाये उसके लक्ष्यों का बालकों की आवश्यकतानुकूल पुनर्लेखन करे।

3. वह अभिभावकों और विशेष शिक्षा के शिक्षकों के साथ समूह भावना के साथ काम करते हुए यह सीखे की बालक किस कौशल को पसन्द करता है और फिर सही शिक्षण उपागम उपलब्ध करवाये।

4. वह इस विचार से चले कि हर बालक शिक्षक को अच्छा शिक्षक बनने का अवसर प्रदान करता है न कि वह समस्या मूलक बनता है।

5. व्यवहार में लचीलापन और उच्च स्तर की सहनशीलता की भावना हो।

आज से कुछ वर्षों पहले ऐसा समझा जाता था कि सामान्य नियमित स्कूलों में एक साथ असमर्थ और समर्थ बालकों का शिक्षण करना बहुत दूर की बात है, दूसरे शब्दों में यह कहें कि ऐसा होना नामुमकित है। लेकिन आज सफलतापूर्वक अमेरिका, कनेडा, इटली, आस्ट्रेलिया और अन्य देशों में छोटे और अनेक स्कूलों में समर्थ एवं असमर्थ बालकों को एक साथ पढ़ाया जा रहा है। हमारे देश में नीति निर्धारण का कार्य हो चुका है। समावेशी शिक्षा से सम्बन्धित N. C. E. R. T. देहली ने समावेशी स्कूलिंग के माड्यूल (Module) का विकास करने हेतु 12-13 फरवरी 2001 में वर्कशाप का आयोजन भी किया था। हमें अपने देश के लिये समावेशी स्कूलों के प्रति आशा जनक दृष्टिकोण रखते हुए यह समझ लेना चाहिये कि समावेशी शिक्षा में अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी अगर हम निम्न विशेष बातों पर ध्यान दें।

1. समावेशी स्कूल में भेजने से पहले हम शिक्षकों को समावेशन के सिद्धान्त और व्यावहारिक पक्ष के बारे में पूर्ण रूप से उन्मुख करें।

2. मुख्याध्यापक शिक्षकों को अनुदेशनात्मक नेतृत्व प्रदान करें।

3. शिक्षकों में प्रतिबद्धता और क्षमता का होना।

4. पूर्व सेवाकालीन शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत भावी शिक्षकों के कोर्स में समावेशी शिक्षा को स्थान दिया जाये।

5. बजट में पर्याप्त रूप से यह प्रावधान हो ताकि समावेशी स्कूलों के संचालन हेतु वित्तीय खर्च किये जा सकें।

6. पर्याप्त रूप से मोनिंटरिंग (Monitoring) और सुपरवीजन (Supervision) किया जाये।